Padma Bhushan

DR. ARKALGUD ANANTARAMAIAH SURYA PRAKASH

Dr. Arkalgud Anantaramaiah Surya Prakash is an eminent scholar and a distinguished media professional, whose work has enriched India's democratic and parliamentary landscape. With over five decades of experience in print and electronic media, he has held prestigious positions including that of Chairman, Prasar Bharati, India's public service broadcaster and Vice-Chairman, Executive Council of the Prime Ministers Museum and Library.

2. Born on 9th February, 1950, Dr. Surya Prakash received his Bachelor of Science degree from Bangalore University, M.A in Sociology (Mysore University), D.Litt (Tumkur University) for his thesis on the working of India's Parliament and L.L.B (Chaudhary Charan Singh University). His deep insights into constitutional and parliamentary affairs have shaped national discourse, influenced significant reforms and strengthened the democratic ethos of the country. His advocacy for greater functional efficiency of democratic bodies and transparency in governance led to the introduction in 1993 of the department-related standing committee system in Parliament and the televising of parliamentary proceedings, bringing greater accountability to the legislative process.

3. A prolific writer, Shri Surya Prakash authored What Ails Indian Parliament, in 1995, which is regarded as a seminal work on the functioning of parliament and on how Indian MPs cope with their duties within the two Houses while facing immense constituency pressures. In 2013, he decided to examine the working of the Members of Parliament Local Area Development Scheme (MPLADS) in his much-acclaimed book Public Money, Private Agenda – The Use and Abuse of MPLADS. His conclusions led to a national discourse on the efficacy of MPLADS. In 2017, his book The Emergency - Indian Democracy's Darkest Hour, highlighted the dreadful fallout of the Emergency. He has also contributed a chapter titled Need to Regulate the Working of Political Parties in G.C. Malhotra (Ed.), Fifty Years of Indian Parliament, Lok Sabha Secretariat, New Delhi, 2002.These authoritative texts, which constitute critical audit of democratic institutions, have considerably enriched available literature in the area of democracy studies in India.

4. In recent years, Dr. Surya Prakash has turned his attention to the constitutions of various countries around the globe, resulting in a path breaking thesis on the features that ought to be there in the constitutions of nations which claim to be democracies. His meticulous research has cleared misconceptions about India's democratic framework, highlighting the unparalleled rights and freedoms enshrined in the Indian Constitution. This thesis was published by the Vivekananda International Foundation (VIF), New Delhi. Dr. Surya Prakash has tirelessly defended India's democratic principles on global platforms including the Global Conference for Media Freedom in London in July, 2019.

5. During his career spanning over half a century, Dr. Surya Prakash has held key responsibilities in media which include Chief of Bureau, The Indian Express, New Delhi; Political Editor, Eenadu Group, New Delhi; India Editor, Asia Times; Executive Editor, The Pioneer; and Editor, Zee News. Beyond journalism and academia, Dr. Surya Prakash has been instrumental in shaping policy discussions. As Vice-Chairman of the Executive Council of the Prime Ministers Museum and Library, his pivotal role in curating the Pradhanmantri Sangrahalaya underscores his commitment to preserving and strengthening independent India's democratic legacy. He was also Chairman of the committee on merger of LSTV & RSTV & creation of Sansad TV.

6. Dr. Surya Prakash's expertise and leadership have been recognized with prestigious awards and honours. They include the fellowship from the Friedrich Ebert Foundation in Germany in 1995 which enabled him to study the working of the Bundestag Committees, the Bipin Chandra Pal Samman for Fearless Journalism in 2002, Karnataka Rajyotsava Award in 2010 and the award of D.Litt (Honoris Causa) by the SGT University, Haryana in February, 2025.

डॉ. अरकलगुड अनन्तरामैया सूर्य प्रकाश

डॉ. अरकलगुड अनन्तरामैया सूर्य प्रकाश एक प्रख्यात विद्वान और प्रतिष्ठित मीडिया पेशेवर हैं, जिनके योगदान ने भारत के लोकतांत्रिक और संसदीय परिदृश्य को समृद्ध किया है। प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में पांच दशकों से अधिक के अनुभव के साथ, उन्होंने भारत के सार्वजनिक सेवा प्रसारक प्रसार भारती के अध्यक्ष और प्रधान मंत्री संग्रहालय तथा पुस्तकालय की कार्यकारी परिषद के उपाध्यक्ष जैसे प्रतिष्ठित पदों पर कार्य किया है।

2. 9 फरवरी, 1950 को जन्मे, डॉ. सूर्य प्रकाश ने बंगलौर विश्वविद्यालय से विज्ञान स्नातक की डिग्री, समाजशास्त्र में स्नातकोत्तर (मैसूर विश्वविद्यालय), भारत की संसद के कामकाज पर अपने शोध के लिए डी. लिट (तुमकुर विश्वविद्यालय) और एलएलबी (चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय) की डिग्री प्राप्त की। संवैधानिक और संसदीय मामलों में उनकी गहरी अंतर्दृष्टि ने राष्ट्रीय विमर्श को प्रेरित किया है, महत्वपूर्ण सुधारों को प्रभावित किया है और देश के लोकतांत्रिक लोकाचार को मजबूत किया है। लोकतांत्रिक निकायों की अधिक कार्यदक्षता और शासन में पारदर्शिता के लिए उनकी वकालत के परिणामस्वरूप 1993 में संसद में विभाग–संबंधी स्थायी समिति प्रणाली और संसदीय कार्यवाही के टेली प्रसारण की शुरुआत हुई, जिससे विधायी प्रक्रिया में अधिक जवाबदेही आई।

3. एक सफल लेखक श्री सूर्य प्रकाश ने 1995 में व्हाट एल्स इंडियन पार्लियामेंट (What Ails Indian Parliament) लिखी, जो संसद के कामकाज और भारतीय सांसद किस प्रकार निर्वाचन क्षेत्र में भारी दबाव को झेलते हुए दोनों सदनों में अपने दायित्वों का निर्वहन करते हैं, इस पर एक सारगर्भित कार्य माना जाता है। 2013 में, उन्होंने अपनी बहुप्रशंसित पुस्तक पब्लिक मनी, प्राइवेट एजेंडा दृद यूज एंड एब्यूज ऑफ एमपीएलएडीएस में सांसद स्थानीय सेवा विकास योजना (एमपीएलएडीएस) के कार्य संचालन की जांच करने का फैसला किया। उनके निष्कर्षों ने एमपीएलएडीएस की प्रभावकारिता पर एक राष्ट्रीय विमर्श को जन्म दिया। 2017 में, उनकी पुस्तक द इमरजेंसी – इंडियन डेमोक्रेसीज डार्केस्ट ऑवर ने आपातकाल के भयानक नतीजों पर प्रकाश डाला। उन्होंने 2002 में जीसी मल्होत्रा द्वारा संपादित फिफ्टी इयर्स ऑफ इंडियन पार्लियामेंट, लोक सभा सचिवालय, नई दिल्ली में राजनीतिक दलों के कामकाज को विनियमित करने की आवश्यकता शीर्षक से एक अध्याय भी लिखा। लोकतांत्रिक संस्थाओं की आलोचनात्मक समीक्षा करने वाली इन प्रामाणिक पुस्तकों ने भारत में लोकतंत्र अध्ययन के क्षेत्र में उपलब्ध साहित्य को काफी समृद्ध किया है।

4. हाल के वर्षों में, डॉ. सूर्य प्रकाश ने दुनिया भर के विभिन्न देशों के संविधानों पर अपना ध्यान केंद्रित किया है, जिसके परिणामस्वरूप उन विशेषताओं पर एक अग्रणी शोध प्रबंध तैयार हुआ है जो लोकतंत्र होने का दावा करने वाले देशों के संविधानों में होनी चाहिए। उनके बारीकी से किए गए शोध ने भारत के लोकतांत्रिक ढांचे के बारे में गलत धारणाओं को दूर किया है, जिसमें भारतीय संविधान में निहित बेजोड़ अधिकारों और स्वतंत्रताओं पर प्रकाश डाला गया है। यह शोध प्रबंध विवेकानंद इंटरनेशनल फाउंडेशन (वीआईएफ), नई दिल्ली ने प्रकाशित किया। डॉ. सूर्य प्रकाश ने जुलाई, 2019 में लंदन में ग्लोबल कांफ्रेंस ऑन मीडिया फ्रीडम सहित कई वैश्विक मंचों पर भारत के लोकतांत्रिक सिद्धांतों का लगातार बचाव किया है।

5. आधी शताब्दी से अधिक समय के अपने करियर के दौरान, डॉ. सूर्य प्रकाश ने मीडिया जगत में प्रमुख जिम्मेदारियां निभाई हैं, जिनमें द इंडियन एक्सप्रेस, नई दिल्ली के ब्यूरो प्रमुख; ईनाडु ग्रुप, नई दिल्ली के राजनीतिक संपादक; एशिया टाइम्स के भारत संपादक; द पायनियर के कार्यकारी संपादक; और ज़ी न्यूज़ के संपादक के रूप में उनकी भूमिकाएं शामिल हैं। पत्रकारिता और शिक्षा के अलावा, डॉ. सूर्य प्रकाश नीतिगत विचार–विमर्शों को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते रहे हैं। प्रधानमंत्री संग्रहालय और पुस्तकालय की कार्यकारी परिषद के उपाध्यक्ष के रूप में, प्रधानमंत्री संग्रहालय की देखभाल में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका स्वतंत्र भारत की लोकतांत्रिक विरासत को संरक्षित करने और उसे मजबूत करने के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को दर्शाती है। वह लोक सभा टीवी और राज्य सभा टीवी के विलय और संसद टीवी के सृजन संबंधी समिति के अध्यक्ष भी थे।

6. डॉ. सूर्य प्रकाश की विशेषज्ञता और नेतृत्व को कई प्रतिष्ठित पुरस्कारों और सम्मानों से स्वीकृति मिली है। इनमें 1995 में जर्मनी में फ्रेडरिक एबर्ट फाउंडेशन से फेलोशिप, जिससे उन्हें बुंडेसटैग समितियों के कामकाज का अध्ययन करने में मदद मिली, 2002 में निर्भीक पत्रकारिता के लिए बिपिन चंद्र पाल सम्मान, 2010 में कर्नाटक राज्योत्सव पुरस्कार और फरवरी, 2025 में एसजीटी विश्वविद्यालय, हरियाणा द्वारा डी. लिट् (मानद) सम्मान शामिल है।